अध्याय
9

क्रिया

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा राज्य प्रशासनिक सेवा परीक्षा के लिये 'सामान्य हिन्दी' प्रश्नपत्र के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए 'क्रियाएँ' नामक अध्याय के अंतर्गत क्रिया एवं उनके प्रकार, काल एवं उनके प्रकार, वाच्य एवं उनके प्रकार, अव्यय एवं उनके प्रकार तथा क्रिया-विशेषण आदि को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

9.1 क्रिया एवं उनके प्रकार

सामान्य अर्थों में जब किसी शब्द के द्वारा किसी कार्य के होने या करने का भाव उत्पन्न हो, उसे क्रिया कहा जाता है।

उदाहरण- खाना, टहलना, पढ़ना आदि।

क्रिया के रूप, लिंग एवं वचन आदि के अनुसार बदलते रहते हैं इसलिये उसे विकारी शब्द माना गया है। क्रिया के मूल में धातु निहित होती है। यदि 'लिखना' क्रिया को लिया जाए तो इसकी मूल धातु 'लिख' है तथा 'ना' प्रत्यय है। धातु 'क्रिया' पद के उस भाग को कहा जाता है जो किसी क्रिया के लगभग सभी रूपों में पाया जाता है। शब्द निर्माण की दृष्टि से धातुएँ दो प्रकार की होती हैं-

- मूल धातु
- यौगिक धातु

मूल धातु

मूल धातु उसे कहा जाता है जो किसी पर आश्रित न होकर स्वतंत्र होती है।

जैसे: खा, जा, गा, रो आदि।

यौगिक धातु

यौगिक धातु उन धातुओं को कहा जाता है जिनका निर्माण 'प्रत्यय' जोड़कर किया जाता है।

जैसे: लिखना से लिखा, पढ़ना से पढ़ा आदि।

क्रिया के प्रकार (भेद)

रचना की दृष्टि से क्रिया के दो प्रमुख भेद होते हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया

1. अकर्मक क्रिया

जिस क्रिया को किसी कर्म की आवश्यकता नहीं होती तथा उसके कार्य का फल कर्त्ता पर ही पड़े, उसे **अकर्मक क्रिया** कहते हैं। उदाहरणार्थ–

(i) राम सोता है। यहाँ सोने का फल राम पर ही पड़ता है।

2. सकर्मक क्रिया

भाव को स्पष्ट करने के लिये जिस क्रिया को कर्म की आवश्यकता पड़ती है, उसे **सकर्मक क्रिया** कहते हैं। उदाहरणार्थ–

राम आम खाता है।

यहाँ राम कर्त्ता है। यहाँ राम के खाने के क्रिया का असर आम पर पड़ता है।

कभी-कभी सकर्मक क्रिया का कर्म छिपा रहता है।

जैसे- राम गाता है। यहाँ गीत छिपा है।